B.A. III
Paper - VI
Lec - 1.
Dr. Ashish Kumar Kundu

Topic - 'Communism' (साम्यवाद)

साधारणतः समाजवाद और साम्यवाद को एक ही विचार के रूप में

माना जाता है पर यह एक भ्रम है। साम्यवाद समाजवाद का एक रूप है किन्तु सभी साम्यवादी समाजवादी हैं पर सभी समाजवादी साम्यवादी नहीं हैं। साम्यवाद एक वर्ग-रहित तथा राज्य-रहित समाज की कल्पना है, उस आदर्श समाज का आधार शक्ति या वर्ग-संघर्ष नहीं होगा बल्कि समाज के लोगों का परस्पर सहयोग। उस अवस्था में न विभिन्न वर्ग होंगे और न राज्य होगा इसलिए हितों में संघर्ष का कोई प्रश्न ही नहीं उठता।

इस समाज में सभी आत्मनियोजक होंगे और योग्यता के अनुसार काम करेंगे और सब अपनी आवश्यकता के अनुसार वस्तुओं का उपभोग करेंगे।

यहाँ प्रश्न यह है कि ऐसे समाज की स्थापना के साधन क्या होंगे? साम्यवाद इस स्थिति को प्राप्त करने के लिए शान्तिपूर्ण, अहिंसक तथा वैधानिक साधनों को उचित नहीं मानता। साम्यवादियों के अनुसार बिना हिंसक क्रान्ति के न पूँजीवादी व्यवस्था का उन्मूलन संभव है और न साम्यवादी व्यवस्था की स्थापना। इसलिए श्रमिकों के हित में पूँजीपति कभी भी स्वेच्छा से अपने हितों का त्याग नहीं करेंगे। इसलिए हिंसक क्रान्ति के द्वारा सर्वहारा वर्ग का अधिनायक तंत्र की स्थापना होगी और तब पूँजीपतियों का तथा अन्य शोषकों का उन्मूलन कर एक वर्ग-रहित समाज की स्थापना संभव होगी। तब किसी प्रकार के नियंत्रण की आवश्यकता नहीं रहेगी और राज्य का अस्तित्व लोप हो जाएगा।

साम्यवादियों के अनुसार साधन का वैसा महत्त्व नहीं है जैसा कि लक्ष्य का। उसके औचित्य का मापदण्ड है [illegible] यदि हिंसक क्रान्ति से साध्य की प्राप्ति संभव है तो साधन का औचित्य भी सिद्ध होता है।

अनुसार, लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उसके साधन का औचित्य है। साम्यवादी लक्ष्यों की प्राप्ति तो उसके साधन का औचित्य भी सिद्ध होता है, संक्षेप में साम्यवाद का लक्ष्य है एक वर्ग-विहीन और राज्य-विहीन समाज की स्थापना जिसका आधार शोषण नहीं, सद्भाव तथा सहयोग होगा। उत्पादन और वितरण के साधनों पर समाज का स्वामित्व होगा। आदर्श समाज की स्थापना एक बारगी संभव नहीं है। हिंसक क्रान्ति के फलस्वरूप पूँजीवादी समाज नष्ट हो जाएँगे। उसके बाद संक्रमणकाल में सर्वहारा वर्ग का अधिनायक तंत्र होगा और तब सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व होगा। इस अवस्था में राज्य का अस्तित्व बना रहेगा। इसमें प्रशासन का स्वरूप समाजवादी होगा। इसलिए सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व पूँजीपतियों का उन्मूलन कर वर्गहीन समाज की स्थापना संभव होगी। इसलिए सर्व-हारा वर्ग का अधिनायकतंत्र साम्यवाद के लक्ष्य की प्राप्ति का एक साधन है, सर्वहारा वर्ग का अधिनायकतंत्र साम्यवादी आदर्श की प्राप्ति का साधन है। अन्तिम आदर्श है वर्गविहीन, राज्यविहीन समाज की स्थापना।

मार्क्स और एंगेल्स ने साम्यवादी घोषणा पत्र में निम्नलिखित बातों का उल्लेख किया है जिनको साम्यवादी सामाजिक लक्ष्यों में अपनाया।

1. भूमि पर वैयक्तिक स्वामित्व का उन्मूलन तथा भूमि-कर का सार्वजनिक लक्ष्यों में उपयोग।
2. एक प्रगतिशील आयकर लगाना। 3. सभी प्रकार के उत्तराधिकार की समाप्ति। 4. देशद्रोहियों और विद्रोहियों की सम्पत्ति को अपने अधिकार में लेना। 5. एक राष्ट्रीय बैंक की स्थापना और साख सम्बन्धी सभी व्यवस्थाओं पर अधिकार रखना और साख का राज्य के द्वारा केन्द्रीकरण।
6. राज्य के सभी यातायात के साधनों का केन्द्रीकरण।
7. सम्पूर्ण उत्पत्ति के साधनों को अपने अधिकार में लेना और राज्य द्वारा खोले गये नये उद्योगों पर राज्य का अधिकार, भूमि-सुधार।
8. बच्चों, श्रमिकों तथा अन्य व्यक्तियों के लिए निःशुल्क शिक्षा।
9. सभी प्रकार के श्रम के लिए समान उत्तरदायित्व और श्रम-सेना की स्थापना।

— X —